3. मराठी संतों का काव्य
4. संत कवियों का दार्शनिक चिंतन
5. रामभक्ति काव्य का दार्शनिक आधार
6. कृष्णभक्ति परंपरा और शुद्धाद्वैतवाद
7. सूफीकाव्य और एकेश्वरवाद
8. चंडीदास और चैतन्य महाप्रभु की भक्ति
9. प्रमुख भक्त कवयित्रियाँ

नोट: उपर्युक्त विषयों के अतिरिक्त अखिल भारतीय भक्ति साहित्य और उसके दार्शनिक पक्ष से जुड़े अन्य विषयों पर भी आलेख स्वीकृत किए जाएंगे। ईमेल द्वारा संगोष्ठी-प्रपत्र का सारांश दिनांक 28 फरवरी, 2024 तक और पूर्ण आलेख दिनांक 01 मार्च, 2024 तक स्वीकार किए जाएंगे। कृपया अपने आलेख vkmgci@tripurauniv.ac.in और alokhv16@gmail.com पर प्रेषित करें। संगोष्ठी से संबंधित किसी भी जानकारी के लिए मो. नं. 7005299729, 8887607106 अथवा 7522968490 पर संपर्क करें। चयनित प्रपत्र की सूचना प्रतिभागियों को 02 मार्च, 2024 तक दे दी जाएगी।

स्वागत उपसमिति

प्रो. विनोद कुमार मिश्र, प्रो. मिलन रानी जमातिया, प्रो. मोहन देबबर्मा
डॉ. काली चरण झा, डॉ. ऐश्वर्या झा, डॉ. बीना देबबर्मा, डॉ. सत्यदेव मिश्र, डॉ. विश्वबंधु
डॉ. मनोज कुमार मौर्य, डॉ. आलोक कुमार पाण्डेय, डॉ. प्रमोद राजभर

आवास, यातायात एवं भोजन उपसमिति

संयोजक: डॉ. मनोज कुमार मौर्य
सदस्य: श्री खाकचांग जमातिया, सुश्री पौशाली मजूमदार, सुश्री सुषमा ताती, श्री जितेंद्र रियांग

तकनीकी उपसमिति एवं रिपोर्टिंग उपसमिति

संयोजक: डॉ. आलोक कुमार पाण्डेय
सदस्य: सुश्री कीर्ति उपाध्याय, श्री रजनीश कुमार, श्री कैलाश पधान, सुश्री एलिना देबबर्मा

वित्त एवं सांस्कृतिक कार्यक्रम उपसमिति

संयोजक: डॉ. ऐश्वर्या झा
सदस्य: डॉ. प्रमोद कुमार राजभर, श्री शिव कुमार, श्रीमती रिंकी कुमारी, सुश्री दीपा झरना देबबर्मा

भारतीय दार्शनिक अनुसंधान परिषद्, नई दिल्ली

एवं

हिंदी विभाग

त्रिपुरा विश्वविद्यालय, सूर्यमणिनगर

के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित

दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी

पूर्वोत्तर का भक्ति साहित्य और भारतीय दर्शन

दिनांक: 4-5 मार्च, 2024
समय: 10.00 बजे, पूर्वाह्न
आयोजन स्थल: संगोष्ठी कक्ष-02, अकादमिक भवन-11, त्रिपुरा विश्वविद्यालय

आयोजन समिति

संरक्षक
प्रो. गंगा प्रसाद प्रसाई
माननीय कुलपति
त्रिपुरा विश्वविद्यालय

संयोजक
प्रो. विनोद कुमार मिश्र
अधिष्ठाता, साहित्य संकाय
एवं अध्यक्ष, हिंदी विभाग

सह-संयोजक
प्रो. मिलन रानी जमातिया
डॉ. बीना देबबर्मा

आमुख:

सन् 1976 में कलकत्ता विश्वविद्यालय के स्नातकोत्तर केंद्र के रूप में एक छोटी–सी शुरुआत से सन् 1987 में एक राज्य विश्वविद्यालय और अंततः सन् 2007 में एक केंद्रीय विश्वविद्यालय के रूप में त्रिपुरा विश्वविद्यालय ने छोटे भू–आबद्ध राज्य त्रिपुरा में एक उच्च शिक्षा संस्थान की उत्कृष्टता की खोज में एक लंबी यात्रा तय की है। विश्वविद्यालय अकादमिक और अनुसंधान गतिविधियों के क्षेत्र में गुणवत्तापूर्ण शिक्षा और तकनीकी नवाचार प्रदान करने हेतु कृत संकल्पित है। प्रदूषण मुक्त, रमणीय और सुरम्य परिवेश युवा और सशक्त मस्तिष्क के पोषण के लिए शैक्षणिक वातावरण प्रदान करता है। एक पारंपरिक विश्वविद्यालय के रूप में त्रिपुरा विश्वविद्यालय ने राज्य के देशी कला प्रारूपों, लोक की मौखिक और बहुआयामी सांस्कृतिक परंपराओं की जीवंत विरासत को संरक्षित और पल्लवित करने की जिम्मेदारी अपने ऊपर ली है। वर्तमान में दूरस्थ शिक्षा निदेशालय के अधीन चार विभागों सहित विश्वविद्यालय में दो संकाय, चौवालीस विभाग और चार अध्ययन केंद्र मौजूद हैं। दूरस्थ शिक्षा निदेशालय इस राज्य के दूर–दराज के पहाड़ी क्षेत्रों में स्थित सामाजिक–आर्थिक रूप से वंचित वर्गों को शैक्षिक सहायता प्रदान करता है। विश्वविद्यालय की भविष्य की योजनाओं में परिसर का विस्तार और सभी विभागों में आईसीटी सक्षम कक्षाओं की तत्काल स्थापना शामिल है। इसके साथ ही शोधार्थियों, स्नातक एवं परास्नातक विद्यार्थियों के लिए अधिकतम छात्रावास, बेहतर कैंटीन, अतिथि–गृह, शैक्षिक एवं गैर–शैक्षिक कर्मचारियों के लिए आवास उपलब्ध कराना है। रोजगारपरक पाठ्यक्रम के विस्तार के लिए आधुनिक तकनीकी उपकरणों और पारस्परिक संवादात्मक शिक्षण–अधिगम के लिए मल्टीमीडिया मोड की सुविधा उपलब्ध कराना भी शामिल है। बदलते समय की मांग के अनुरूप विश्वविद्यालय प्रशासन धीरे–धीरे कुशल, सटीक और पर्यावरण के अनुकूल ई–गवर्नेंस में बदल रहा है।

त्रिपुरा विश्वविद्यालय में हिन्दी विभाग की स्थापना 10वीं योजना के अंर्तगत सन् 2006 ई. में हुई। वर्तमान में हिंदी विभाग द्वारा पी–एच.डी., स्नातकोत्तर, समेकित स्नातकोत्तर (हिंदी) तथा अनुवाद में स्नातकोत्तर डिप्लोमा आदि पाठ्यक्रमों का संचालन किया जा रहा है। हिंदी विभाग का उद्देश्य है – हिंदी भाषा और साहित्य का संवर्धन और विकास करना तथा ज्ञान की सुसंगत शाखाओं में शिक्षण व अनुसंधान की सुविधाएँ प्रदान करना। हिंदी को भाषाई संप्रीति का माध्यम बनाना। हिंदी के साथ अन्य भारतीय भाषाओं के तुलनात्मक अध्ययन और अनुसंधान को बढ़ावा देना। हिंदी सेवी संस्थानों व सामाजिक–सांस्कृतिक संगठनों के साथ शिक्षण–प्रशिक्षण और अनुसंधान के क्षेत्र में रचनात्मक प्रयत्न करना। अनुसंधान को नवाचारी बनाने के लिए तकनीकी माध्यमों को अध्ययन–अध्यापन में शामिल करना। हिंदी को वैश्विक विस्तार देने हेतु लोक साहित्य और भारतीय चिंतन परंपरा को बहुआयामी स्वरूप प्रदान करना। हिंदी के फलक को विस्तारित करने हेतु अनुवाद और कार्यालयी हिंदी के नूतन स्वरूप पर होने वाले चिंतन–मनन को आत्मसात करना और बढ़ावा देना।

उद्देश्य:

मध्यकालीन भक्तिकाव्य न केवल हिंदी साहित्य बल्कि संपूर्ण भारतीय साहित्य का मुकुटमणि है। यह हिंदी साहित्य के इतिहास का सर्वाधिक महत्वपूर्ण कालखंड है। इसे हिंदी साहित्य का *स्वर्ण युग* भी कहा जाता है। इस काल के कवियों ने भारतीय साहित्य और संस्कृति को रचने और सहेजने का कार्य किया है। उल्लेखनीय है कि उस युग के कवि जिन मूल्यों की प्रतिष्ठा अपनी रचनाओं में कर रहे थे वे मूल्य भारतीय दर्शन के प्रस्थान बिन्दु हैं। यह अलग बात है कि उस युग के कवियों की चिंतन–पद्धति में वैविध्य दिखाई पड़ता है। भारतीय दर्शन का स्वरूप अत्यंत विराट है। उसमें ईश्वरवादी हैं तो अनीश्वरवादी भी। कहना न होगा कि जिस तरह का वैविध्य भारतीय दर्शन में दिखाई पड़ता है ठीक उसी तरह का वैविध्य भक्तिकाव्य में भी दिखाई पड़ता है। इस धारा का कोई कवि औपनिषदिक ब्रह्म चिंतन परंपरा से अनुप्राणित हो रहा है तो कोई विष्णु के अलग–अलग अवतार से। यह अकारण नहीं है कि इस युग के कवियों की रचनाओं में रामानुज के 'विशिष्टाद्वैतवाद', वल्लभाचार्य के 'शुद्धाद्वैतवाद', माध्वाचार्य के 'द्वैतवाद' और निम्बार्काचार्य द्वारा प्रणीत 'द्वैताद्वैतवाद' झाँकता हुआ दिखाई पड़ता है। भारतीय दर्शन को अपनी रचना–धर्मिता में ढालने का महनीय कार्य इस कालखंड के कवियों ने किया है।

भक्तिकाल के कवियों का एक महत्वपूर्ण योगदान यह है कि उन्होंने दर्शन जैसे विषय को जनता की भाषा में ढालने का कार्य किया। इसका सर्वाधिक प्रामाणिक उदाहरण गोस्वामी तुलसीदास के यहाँ दिखाई पड़ता है। वे संस्कृत भाषा में संकलित प्राचीन ऋषि–मुनियों के चिंतन को अपनी भाषा में प्रस्तुत करने का प्रयास करते हैं। वे कहते हैं कि *नानापुराणनिगमागमसम्मत यद् रामायणेनिगदितं क्वचिदन्योऽपि स्वान्तःसुखाय तुलसी रघुनाथगाथा भाषा निबंधमति मंजुलमातनोति।।* तुलसीदास अपनी संपूर्ण परंपरा को याद करते हुए उसमें अपने योगदान को विनयी भाव से जोड़ने का आग्रह करते दिखाई पड़ते हैं–*क्वचिदन्योऽपि*। संत कवियों ने औपनिषदिक चिंतन और एकेश्वरवाद को जितनी सहजता के साथ जन सामान्य की भाषा में प्रस्तुत किया है, वह अद्वितीय बन पड़ा है। कबीर, रैदास, दादू, मलूक आदि संत कवियों ने सामान्य जनता के दुख–दर्द को सार्थक ढंग से अभिव्यक्त किया है। उनके काव्य पर सिद्धों और नाथों की चिंतन परंपरा का स्पष्ट प्रभाव दिखाई पड़ता है। इसी तरह जायसी, असाइत, मुल्ला दाऊद, मंझन, कुतबन आदि सूफी कवि हिंदी भक्तिकाव्य को व्यापक फलक प्रदान करते हैं। इसी काल–खंड में सूरदास और मीराबाई जैसी दो महान विभूतियाँ हुईं, जिन्होंने कृष्ण काव्य परंपरा को सर्वाधिक ऊँचाई प्रदान की। उल्लेखनीय है कि कृष्ण को विष्णु के सर्वाधिक लोकप्रिय अवतार के रूप में जाना जाता है। भारतीय चिंतन परंपरा की गहरी छाप इन कवियों की रचनाओं पर दिखाई पड़ती है। भारतीय दर्शन की प्रवहमान धारा ने इस युग के कवियों को गहराई से अभिसिंचित किया है। इस कालखंड के कवियों ने संपूर्ण भारतीयों के सांस्कृतिक अवबोध को जागृत करने का सफल प्रयास किया है।

भक्ति साहित्य का जितना व्यापक स्वरूप उत्तर भारत अथवा मध्य भारत में दिखाई पड़ता है उतना ही व्यापक स्वरूप उत्तर–पूर्व अथवा पूर्वोत्तर में भी दिखाई देता है। पूर्वोत्तर में शंकरदेव और माधवदेव ने भक्ति की ज्योति जलाई। उस ज्योति का प्रकाश संपूर्ण पूर्वोत्तर भारत में फैल गया। भक्ति साहित्य के अध्येताओं ने प्रायः अपनी सुविधा के अनुसार मध्य भारत और दक्षिण भारत के भक्ति साहित्य को संदर्भित करके अपना मन्तव्य व्यक्त किया है। मध्यकालीन भारत में उदित होने वाले सांस्कृतिक आंदोलन पर समेकित रूप से आलोचकों अथवा चिंतकों द्वारा अब भी बहुत कुछ लिखना शेष है। शंकरदेव और माधवदेव पर जिन लोगों ने काम किया है उनमें कृष्ण प्रसाद मागध, भूपेन राय चौधुरी, हीरालाल तिवारी और विवेक श्रीवास्तव के नाम प्रमुख हैं।

अतः उक्त विषयक संगोष्ठी का उद्देश्य न केवल भक्तिकाल के महान कवियों की रचनाओं में निहित तत्व–चिंतन को वैश्विक धरातल पर ले जाना है बल्कि उसमें निहित भारतीय दर्शन के नैरंतर्य और उसकी प्रवहमान प्रवृत्ति से सबको अवगत कराना भी है। भारतीय चिंतन परंपरा और भक्तिकाव्य के मूल में निहित 'परहित' की भावना और उसके सकारात्मक प्रभाव से जनसामान्य को परिचित कराना भी है।

इसी तथ्य को ध्यान में रखकर त्रिपुरा विश्वविद्यालय का हिंदी विभाग 'पूर्वोत्तर का भक्ति साहित्य और भारतीय दर्शन' विषय पर आगामी 4-5 मार्च, 2024 को दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन करने जा रहा है। प्रस्तुत संगोष्ठी के माध्यम से पूर्वोत्तर भारत में भक्ति साहित्य की स्थिति और उसका प्रभाव के साथ–साथ उसके दार्शनिक पक्ष पर विभिन्न दृष्टियों से विचार–विमर्श करना एक महत्वपूर्ण कार्य होगा। विषय की व्यापकता को देखते हुए इसे निम्नलिखित उप–विषयों में विभाजित किया गया है :

1. पूर्वोत्तर का भक्ति साहित्य: शंकरदेव और माधवदेव का दार्शनिक चिंतन
2. आलवार और नायनार कवियों का चिंतन